1. By:- Sunita Kumari
Dept. of History
J.N.C Madhubani

गुप्तकाल को भारतीय इतिहास का स्वर्ण युग-क्यों कहा जाता है

Why has the Gupta period been called the golden age of Indian History?

गुप्त राजवंश का शासनकाल भारतीय इतिहास में स्वर्णयुग के नाम से पुकारा जाता है। इस युग में सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक क्षेत्रों में अत्याधिक उन्नति हुई। गुप्तकाल में देश में सुख-शान्ति व समृद्धि बढ़ी तथा साहित्य कला, विज्ञान आदि सभी क्षेत्रों में आश्चर्यजनक उन्नति हुई वास्तव में इस युग में भारतीय सभ्यता तथा संस्कृति का अभूतपूर्व विकास हुआ। तत्कालीन भारत की इस सर्वांगीण सम्पन्नता के आधार पर इतिहासकारों ने इसे "स्वर्णयुग" की की संज्ञा दी है। इसकी तुलना विश्व के पेरिक्लिज, आगस्टस, एलिजाबेथ के कालों से की गई है। प्रसिद्ध इतिहासकार बार्नेट के अनुसार इस युग की तुलना यूनान के पेरिक्लिज युग से की जा सकती है। अब हम इस गुप्त युग की उन्हीं विशेषताओं पर एक विहंगम-दृष्टि डालेंगे जिनके कारण इसे ऐसी महान संज्ञा दी गई है:—

1. महान सम्राटों का युग:→ किसी भी शासन की सफलता, उस युग की महानता व सामाजिक समृद्धि, उसके शासकों की योग्यता पर अवलम्बित होती है। गुप्तयुग में हमें एक नहीं ऐसे अनेक सर्वतोमुखी प्रतिभासम्पन्न सम्राटों के दर्शन होते हैं, जो सैनिक या सामरिक दृष्टि से अत्यंत पराक्रमी, महान विजेता शासन की दृष्टि से कुशल संगठनकर्ता, लोक कल्याण की दृष्टि से अत्यंत प्रजावत्सल, बौद्धिक दृष्टि से साहित्य प्रेमी,

में पारंगत तथा कला के योग्य पारखी व उनके उदार आश्रयदाता थे।

2. विदेशी सत्ता का अंत:- गुप्त सम्राट देश की सुरक्षा के प्रति सजग थे। उन्होंने देश की स्वतंत्रता की रक्षा तथा राजनीतिक एकता को बनाए रखने के लिए विदेशी जातियों का उन्मूलन करने का निश्चय कर लिया। अतः गुप्त सम्राटों ने शकों कुषाणों को पराजित करके उनके प्रभाव का समूल नष्ट कर दिया।

3. राजनैतिक एकता का युग:- अशोक की मृत्यु के पश्चात तथा गुप्त राजवंश की स्थापना के पूर्व एक लम्बे अर्से तक भारत में राजनीतिक एकता के एक हल्की किरण भी नही दिखलाई पड़ती।

*4. आंतरिक शांति, तथा प्रजा की समृद्धि का युग:- गुप्त शासक दया एवं उदारता से ओत-प्रोत थे। गुप्त सम्राटों ने देश में आन्तरिक शांति और सुव्यवस्था रखने के साथ जनता की सुख-सुविधा एवं समृद्धि के भी अनेक उपकरणों के संयोजन में कोई कसर नही रख छोड़ी थी। कृषि की उन्नति के लिए जलकुण्डों तथा सरोवरों आदि का प्रचुर संख्या में निर्माण किया था। अनेक सड़कों का निर्माण कर तथा स्वर्ण मुद्रा की व्यवस्था कर वाणिज्य-व्यवसाय की उन्नति का मार्ग प्रशस्त किया था।

* 5. कुशल प्रशासन :- गुप्त सम्राटों की शासन-व्यवस्था सुव्यवस्थित तथा सुसंगठित थी। उनकी उत्तम शासन-व्यवस्था के कारण जनता आर्थिक रूप से भी समृद्ध हो सकी। उन्होंने सम्पूर्ण साम्राज्य में शांति था व्यवस्था स्थापित की तथा अपनी प्रजा को आंतरिक एवं बाह्य संघर्षों से सुरक्षित रखा।

* 6. धार्मिक सहिष्णुता का युग :- यह युग हिन्दू-धर्म के पुनरुत्थान का युग था। गुप्त सम्राट हिन्दू-धर्म के अनुयायी थे। उनके प्रश्रय या संरक्षण में इस धर्म ने आशातीत उन्नति की थी किन्तु इन शासकों में धर्मान्धता या धार्मिक संकीर्णता छू तक नहीं गई थी। प्रत्येक व्यक्ति को धर्म, उपासना पाठ-पूजा संबंधी की पूरी स्वतंत्रता थी।

* 7. साहित्यिक अभ्युदय का युग :- गुप्त काल में साहित्य के क्षेत्र में अत्यधिक उन्नति हुई। गुप्त सम्राटों ने संस्कृत को राज्य प्रश्रय देकर उसके विकास का मार्ग प्रशस्त कर दिया था। इसके फलस्वरूप संस्कृत-साहित्य की अभूतपूर्व उन्नति हुई।

* 8. वैज्ञानिक उन्नति का युग :- गुप्तकाल वैज्ञानिक विकास में भी पीछे नहीं रहा ज्योतिष, गणित, रसायनशास्त्र खगोलविद्या आदि सभी क्षेत्रों में अच्छा कार्य हुआ। आर्यभट्ट के 'आर्यभटीयम्' नामक ग्रंथ की रचना इसी युग हुई थी। दशमलव का अन्वेषण भी इसी युग में हुआ था पृथ्वी अपनी धुरी पर घूमती रहती है। चन्द्रमा के सूर्य तथा पृथ्वी के बीच आ जाने से ग्रहण लगता है।

Page 4

* 9. कला का उत्कर्ष-युग :- गुप्तकाल श्रीवृद्धि का युग था। ऐसे युग में सम्राटों का सहयोग पाकर भारतीय कला के विभिन्न अंगों का खूब विकास हुआ। वास्तुकला, चित्रकला, मूर्तिकला, संगीतकला, मुद्रा निर्माणकला, आदि के क्षेत्र में उस काल में अनेक मंदिरों, बौद्धविहारों, चैत्यों, स्तूपों तथा राजमहलों का निर्माण हुआ। नचना कुठार, देवगढ़, झाँसी, भीतरगाँव बौद्ध गया आदि स्थानों के मंदिरों उस काल की उन्नत स्थापत्य कला का बोध कराते हैं। मंदिरों के अतिरिक्त गुप्तकालीन स्मारक भी अपने आकर्षण तथा भव्यता के लिए प्रशंसनीय हैं। मूर्तिकला के क्षेत्र में इस काल में हिन्दु देवी-देवताओं तथा बुद्ध की मूर्तियों का निर्माण हुआ।

10. आर्थिक समृद्धि का युग : → गुप्त-युग में कृषि, उद्योग-धन्धों तथा व्यापार के क्षेत्र में अत्यधिक उन्नति हुई। विदेशी व्यापार अत्यन्त उन्नत अवस्था में था। उद्योग-धन्धों तथा व्यापार की उन्नति के कारण भारत अत्यन्त धन-सम्पन्न बना हुआ था। देश में सोने, चाँदी आदि की प्रचुरता थी।

11. आर्य संस्कृति के प्रसार का युग : → इस युग में आर्यों की संस्कृति का पुनरुद्धार तो हुआ ही, साथ ही उसका अन्य देशों में भी अच्छा प्रसार हुआ। इस युग में वाणिज्य तथा व्यापार में बड़ी वृद्धि हुई थी विदेशों से व्यावसायिक सम्पर्क होने से भारतीय संस्कृति के प्रसार में अच्छी सहायता मिली थी सुमात्रा, बोर्नियो, चम्पा, कम्बोडिया आदि स्थानों में भारतीय संस्कृति ने भारतीयता का संरचना किया था।

By:- Sunita Kumari
Deptt. of History
J. N. College Madhubani

B.A. History (H)
Degree - I
Paper - I

गौतम बुद्ध के जीवन और उपदेशों पर प्रकाश डालें :-
(Discuss the life and teaching of Gautam Buddha.)

- महात्मा बुद्ध बौद्ध-धर्म के संस्थापक थे। इनके बचपन का नाम सिद्धार्थ था। इनके पिता का नाम शुद्धोदन और माता का नाम माया देवी था। शुद्धोदन नेपाल की तराई में स्थित शाक्य वंश के राजा थे। शाक्यों की राजधानी कपिलवस्तु थी। प्रौढ़ावस्था में 563 ई० पूर्व माया देवी के यहाँ सिद्धार्थ ने जन्म लिया। जन्म के सातवें दिन उनकी माता का स्वर्गवास हो गया। अस्तु, सिद्धार्थ का पालन-पोषण माया देवी की छोटी बहन तथा महाराज शुद्धोदन की छोटी रानी महाप्रजापति ने किया। राजकुमार के जन्म के कुछ दिनों पश्चात एक अति वृद्ध ऋषि असित उन्हें देखने आये। उन्होंने स्पष्ट किया कि राजकुमार के शरीर में एक महान आत्मा का निवास है। यह बड़ा होकर एक बहुत बड़े धर्म की स्थापना करके लाखों व्यक्तियों को सांसारिक बन्धनों से छुड़ाकर मुक्ति दिलायेगा। इसका नाम संसार में सदा के लिए अमर रहेगा :-

चार बड़े संकेत और महात्याग :- राजकुमार सिद्धार्थ के बड़े होने पर उनका विवाह एक अति सुन्दर राजकुमारी यशोधरा के साथ हुआ। दोनों का वैवाहिक जीवन सुख और ऐश्वर्य से भरपूर था। कुछ समय पश्चात उन्हें एक अति सुन्दर पुत्ररत्न हुआ। परन्तु विधि के लेखे को कौन टाल सकता है? अतः काल के समय गौतम ने चार ऐसे दृश्य देखे जिनसे उनकी जीवनधारा ही बदल गयी। उन्होंने वृद्ध मनुष्य, रोगी,